कोरोना काल : शिक्षकों के अनुभव

हमें डर नहीं लगता

– विपिन भट्ट

वैश्विक बीमारी कोविड–19 के दौरान जब लॉकडाउन हुआ तब बिटिया वायरल बुखार से ग्रसित थी। मैंने कहा, चलो हम डॉक्टर को दिखाकर आते हैं। बिटिया मेरी बात से सहमत हुई और चिकित्सालय जाने के लिये तैयार हो गई। हम डॉ. उपाध्याय के पास गये तो बिटिया ने नमस्ते बोला। अपनी प्यारी सी मुस्कान के साथ उन्होंने कहा, बोलो कैसे आना हुआ। हमने डॉक्टर साहब को बताया कि इसे वायरल बुखार है और वेट भी दिन–पर–दिन गिरता जा रहा है। इसके लिय क्या उपचार है? डॉक्टर उपाध्याय अपनी जांच के साथ बिटिया से छुट–पुट बात भी करते जा रहे थे। अकस्मात हिलोर ने उनसे पूछा कि हमने मास्क बांधा है, हम सैनेटाइज करके आए हैं आप डॉक्टर है आपने भी मास्क बांधा है आपको भी डर लगता है क्या कोरोना से?

बिटिया के इस प्रश्न पर डॉक्टर उपाध्याय ने कहा 'हिलोर हम डॉक्टर हैं। एक रोगी की जांच करना हमारा दायित्व है। यदि हम डर जायेंगे तो रोगी क्या करेगा। हम इससे डरते नहीं हैं। यह जरूर है हम भी इस बीमारी में सुरक्षा के उपाय जैसे हाथ धोना, सैनेटाइज करना, कान, आंख और नाक में बार–बार उंगलियां नहीं डालना इसका ध्यान रखते हैं। आप भी खाना खाने से पहले और बाद में, कहीं से भी आए या जाए तो बीस सैंकेंड तक हाथ धोए, मुंह पर मास्क लगाएं और दूर से ही नमस्कार कहें। बिटिया ने इन बातों को बडी गहराई से साथ में सुनते हुए कहा, जी मैं ऐसा ही करूंगी। ?

डॉ उपाध्याय ने बिटिया से हंसते हुए तीन दिन बाद आकर पुनः बताने को कहा। डॉ उपाध्याय की इन बातों को बिटिया ने घर आकर अपनी मां, दादा, दादी को सुनाया। तो दादी ने कहा बेटा डॉक्टर भगवान का रूप होते हैं, सबकी सेवा करते हैं। हमें इनका सम्मान करना चाहिए। उसके बाद घर के सभी सदस्यों ने हिलोर की बात मानी और पूरी सावधानी बरती।

(लेखक राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गुलाबपुरा ब्लॉक गढ़ी, बांसवाड़ा में शिक्षक व एसआरजी हैं)

कब फिर से गूंजेगा स्कूल खिलखिलाहटों से

–ऋतु आर्या

मेरा कार्य मुझे बहुत सुकून देता है, बच्चों के बीच रहना, उनसे बातें करना, दिन भर बच्चों की मैमजी, मैमजी कितना अच्छा लगता था। जिन बच्चों के पास फोन है उनसे तो कभी–कभी बात हो जाती पर जिनसे संपर्क नहीं हो पा रहा था पता नहीं वे किस परिस्थिति में होंगे। सबके माता–पिता मजदूरी ही करते हैं और आजकल सभी का काम भी बंद है। बच्चों के घर न तो टी.वी. है न फोन दिन भर घर में कैसे एक कमरे के घरों में खुद को कैद रख पाते होंगे। उनका तो ज्यादातर समय घर के बाहर ही खेलने में बीतता था।

मेरा घर विद्यालय के पास ही है, मैं यूं ही एक दिन विद्यालय में चली गयी कि देखूं मेरा स्कूल कैसा है? स्कूल का ताला खोलकर मैं अन्दर गयी तो आंखें भर आयीं। वहां न बच्चों का शोर था न मेरे करने को कुछ। गुड मॉर्निंग बोलने में भी बच्चों में होड़ रहती थी कि मैडम के पास पहले कौन जायेगा और बोलेगा गुड मॉर्निंग। बच्चों को हर समय पढ़ो–पढ़ो कह कर थक जाते थे, पर बच्चे अपना बचपन कहां छोड़ने वाले थे वो तो उसे भरपूर जीना चाहते थे, शायद इस बंधन का एहसास उन्हें हो रहा था। फिर मैं क्लास के अन्दर गयी जहां मेरे बच्चे बैठकर पढ़ते थे अपने हाथों से उन्होंने चार्ट बनाकर कक्षा–कक्ष को सुसज्जित किया हुआ था। अपनी बेंच में वे अपनी पुस्तकें छोड़ कर जाया करते थे, कहते थे कि मैडम बहुत भारी होती हैं ये पुस्तकें।

उन किताबों में चार्ट में बेंच में सिर्फ धूल ही धूल थी। जिन बच्चों के पास मेरा फोन नंबर था उनके अब फोन भी आने शुरू हो गए हैं कि मैडम स्कूल कब खुलेंगे। कई बच्चे तो छुट्टी पसंद भी नहीं करते थे, छुट्टी के बाद भी वो हमारे पास आ जाते थे, कहते थे मैडम ये छुट्टियां क्यों होती हैं? हमें घर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता तो अब कैसे रह रहे होंगे वे घर के भीतर। बच्चों ने बड़े प्यार से जो क्यारियां सजायी थीं, उनमें जो सब्जियों के बीज बोये थे

वो उग तो आये हैं पर बच्चों के बिना मानो बढ़ना भूल गए हों। उन क्यारियों में जंगली घास भी उग आई है मानो वो भी बच्चों के कदमों की आहट सुनना चाहती हों। आठवीं के बच्चों की विदाई पार्टी भी थी 14 मार्च की, 13 मार्च से ही विद्यालय बंद हो गया,बच्चे 1 मार्च से ही तैयारी करते रहे हैं, कि हम क्या पहनेंगें। छोटी–छोटी सी वो बच्चियां कितनी सुन्दर हैं। कक्षा–8 के बच्चे पूछते हैं कि मैडम अब क्या हमारी विदाई नहीं होगी, अब हम नवीं कक्षा में कब और कहां प्रवेश लेंगे? और भी कई प्रश्नों से जूझ रहे होंगे वे इस वक्त, जो वो फोन पर नहीं कह पा रहे हैं। मैं दुआ करती हूं कि शीघ्र ही ये महामारी खत्म हो, सभी लोग स्वस्थ और निरोगी रहे, सभी पृथ्वीवासी अपनी पुरानी दिनचर्या में व्यस्त हो, सुखी हो, प्रसन्न हो और जिन्दगी फिर से पहले की तरह गुनगुनाने लगे।

(उच्च प्राथमिक विद्यालय अजबपुर, देहरादून)

कहां गये सब लोग

– विनय भट्ट

लॉकडाउन के दौरान सडकें वीरान हो गईं। दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आता था। आसमान नीला हो गया था, नदियों तालाबों में पानी नहीं, हवा बेरूखी सी, मंदिर, मैदान, पार्क सब सुनसान। दिन भर शहर में विचरण करने वाले जानवर हैरान–परेशान से एक जगह एकत्र होकर बात करते।

वो मिठाई की दुकानें, वो चाट–समोसे की लारियां कहीं नजर नहीं आ रही, कहां गये सारे लोग अचानक, इतना सन्नाटा क्यों है।

गाय, कुत्ता, गधा आराम से घूम रहे हैं, कोई रोकने और मारने वाला नहीं है। कहां गये सारे लोग। गाय और कुत्ते ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा। हुआ क्या है कोई तो बताओ गिलहरी ने कूदते हुए पूछा।

इतने में बंदर खबर लाया अरे सुना है तुमने एक कोरोना नाम की कोई बीमारी आई है, इसलिये सब घरों में कैद हैं। यह छूने से भी फैल जाती है। इतने में चिड़िया, कबूतर, तोता, मैना भी उड़ते हुए आये और बोले हां सही बात है सारे होटल बंद हैं, सारे बाजार बंद हैं। कहीं भी कुछ नहीं मिल रहा है।

बंदर बोला हां सही कह रहे हो कोई अदृश्य वायरस आया है, यह एक दूसरे के छूने से भी फैलता है। घर में रहने से ही इससे बचा जा सकता है। वरना संक्रमण फैल जाएगा।

एक कोने में बिल्ली उदास बैठी थी, उससे पूछा तुम क्यों उदास हो। तो बोली क्या बताऊं कुछ खाने को नहीं मिल रहा है, सब घरों में रहते हैं, देर रात तक जागते रहते हैं कब तक भूखी रहूं। चिड़िया भी दुखी होकर बोली सब जगह स्प्रे डालकर सैनेटाइज कर दिया है कहीं कीड़े–मकोड़े भी नहीं दिख रहे है।

बंदर बोला याद करो वो दिन जब इन्होंने हमारे घर उजाडे थे, नए घर, कालोनियां, कारखाने, सड़कें सब बना दिये थे। हमारे घोंसले, आश्रय स्थल तक तोड़ दिये थे। गाय बोली अब इनको पता चल गया होगा कि प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा क्या होता है, आज हम आजाद हैं और वो सब कैद में। अब समझ में आ रहा होगा कि कैसे अपने स्वार्थ की खातिर जंगल के जंगल बर्बाद कर दिये। अब मानव घर परिवार में रहकर चिंतन मनन कर रहा होगा।

कुछ किस्से कुछ बातें

– देवशंकर मेहता

जब भी मैं फील्ड में होता हूं लोगों से अक्सर हमें दिए गये निर्देशानुसार हालचाल पूछता हूं। जिसमें कोरोना लक्षण से संबंधित जानकारियां प्राप्त करनी होती हैं। मेरा कार्यक्षेत्र कुण्डियापाडा, वीडापाडा, वीडाखूंता (भुवासा) है। जिसमें सामान्यतः अत्यंत गरीब जनजाति एवं कनिया परिवार रहते हैं। एक दिन मैं फील्ड में होम आइसोलेट किए गये लोगों की जानकारी हेतु घूम रहा था। इसी दौरान मैंने मोहल्ले में गुजरते हुए एक बुजुर्ग से पूछा कि चाचा, आपका हालचाल कैसा है? परिवार में सब ठीक हैं? किसी को सर्दी, जुकाम, बुखार, खांसी, गले में खराश तो नहीं है? चाचा ने कहा नहीं। मैंने फिर कहा ऐसी कोई समस्या हो तो छिपाएं नहीं, हमें बताएं। हम मेडिकल टीम से कहकर इसके इलाज की व्यवस्था करेंगे। उस बुजुर्ग चाचा ने जबाब दिया कि, 'साहब जो आपने पूछा वैसा तो कुछ नहीं किंतु एक समस्या है कि घर बैठे–बैठे भूख बहुत लगती है। इसका कोई इलाज हो तो बताएं।' मैं सुनकर स्तब्ध रह गया। मैं समझ गया कि वे क्या कहना चाहते हैं? मैं विचार में पड़ गया कि क्या इलाज बताऊं? मैने संभलकर पूछा, क्यों चाचा, आपको सरकार की ओर से मुफ्त गेहूं नहीं मिला? उन्होंने फिर जबाब दिया गेहूं तो

मिला भी है और दो बोरी मेरे खेत में भी पका है। किंतु आपको तो पता ही है, ना साहब कि अनाज साबुत नहीं खाया जाता उसे भी पेट में भेजने से पहले (तोडी तेरह वने मांगे है) एक कहावत अर्थात हल्दी, तेल, मिर्च, जीरा, राई लगाना पडता है। मैं उनके कहने का भाव समझ चुका था। उसके कुछ दिन बाद मैंने अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की तरफ से प्राप्त राहत सामग्री पैकेट भी उन तक पहुंचाई। किंतु मैं जानता हूं कि सात सदस्यों वाले उस बुजुर्ग के परिवार के लिये यह काफी नहीं है।

ये वक्त बदल जायेगा

अभी कुछ दिन पहले ड्यूटी के दौरान मैं मेरी स्कूल राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुण्डियापाडा के पीछे की पहाड़ी पर स्थित मकानों में किसी अन्य जिले, या राज्य से अपने घर आए लोगों की सर्वे एवं जानकारी प्राप्त कर रहा था। तभी मैंने उस पहाड़ी के नीचे स्थित आम के पेड़ों के आसपास कुछ बच्चों को खेलते हुए देखा।

बच्चों की संख्या लगभग 8–10 थी। मैंने बच्चों को दूर से ही पहचान कर पहाड़ी पर स्थित उनके घरों में अभिभावकों से शिकायत के लहजे में कहा कि इस कोरोना महामारी में आप कितने लापरवाह हैं, देखो आप सबके बच्चे साथ–साथ खेल रहे हैं। सोशल डिस्टेंसिंग (सामाजिक दूरी) का पालन न तो आप कर रहे हैं और ना ही आपके बच्चे। तभी एक महिला ने हंसते हुए कहा "मास्टरजी, बच्चे हैं कि मानते ही नहीं।" उसने कहा कि मेरा सुरेश तो आज से तीन साल पहले जब स्कूल नहीं गया था, तब गुमसुम एवं अकेला ही रहता था किसी से ज्यादा बात नहीं करता था। आपने ही एक दिन आकर कहा कि "काकी, आपका सुरेश 5–6 साल का हो गया है। इसे स्कूल में दाखिला करवा दीजिये। तब मैंने आपसे भी इसके एकाकीपन और किसी से ज्यादा बात नहीं करने के बारे में बताया था। मास्टरजी, तब आपने ही कहा था, इसे एक बार हमारे स्कूल में भर्ती कर दो। जब स्कूल आने लगेगा तो यह बात करना सीखेगा। घर में घुल–मिल कर भी रहेगा। समाज में चार लोगों के साथ रहना, उठना–बैठना भी सीख जाएगा। सो मैंने भर्ती करा दिया। काकी ने आगे कहा, अब वह बिल्कुल खुल गया है। घर में अच्छी बातें करने लगा है। अब वह सबसे घुल मिल गया है तो आप उसे सबसे दूर रहने का कह रहे हो। वह समाज के चार लोगों (बच्चों) के साथ खेलने, उठने, बैठने लगा है तो आप उसे पुनः एकाकी रहना बता रहे हो। काकी के हंसते हुए किये जा रहे व्यंग्य को मैं समझ रहा था कि यह कैसा कोरोना वायरस है, जिसने मेरी शिक्षा के उद्देश्यों एवं मायनों को बदल दिया है।

ये बैलों का शाप है

एक दिन कोरोना ड्यूटी के दौरान मैं कुण्डियापाडा मजरे से गुजर रहा था। कुछ महिलाएं आंगन में बैठी गेहूं की बालियां कूट रही थीं। मैं उनके पास गया, उन्होंने अभिवादन किया। मैंने भी नमस्कार किया और पूछा क्यों मां जी आप इकट्ठा भी बैठे हैं और मास्क भी नहीं लगाया। आप दूर–दूर बैठकर काम करो और मुंह पर मास्क या कपडा भी बांधो। ऐसा नहीं करना असावधानी है। एक आंगन में एक पेड़ के नीचे बैठे एक प्रौढ़ कमजी काका ने कहा "मास्टर साहब, ये अनाज को चारे से पृथक करते समय आप हमें मास्क लगवा रहे हो, मुझे वो समय याद आ रहा है जब, ये ट्रैक्टर, थ्रेसर या मशीनरी नहीं थी और हम खेती–बाडी के लिये पूरी तरह बैलों पर निर्भर थे। चाहे खेतों की बुवाई हो, जुताई हो या अनाज का पृथक्करण (अर्थात अनाज को घास से अलग करना हो।)। जब हम छोटे थे हमारे यहां अनाज को (गेहूं, धान, दालें) आदि को घास से अलग करने के लिए बैलों की दामण (बीच में लकडी की मेंड से बांधकर बैलों को फसल पर घुमाना) जोतते थे। तो उसमें तीन–चार बैल एक साथ बांधकर घेरे में गोल–घुमाते थे। इस दौरान बैल अनाज नहीं खा जाए इस कारण बैलों के मुंह पर होंडा (मास्कनुमा रस्सी का जाल) बांध देते थे। जिससे बैल फसल पर घूमते हुए भी फसल खा नहीं पाते थे। कमजी काका ने आगे कहा कि "बैलों ने उस समय अपनी स्वयं की कमाई हुई फसल होंडा बांधकर मनुष्य द्वारा नहीं खाने दिये जाने पर हो सकता है हम मनुष्यों को शाप दिया हो कि एक दिन तुम भी मुंह में होंडा बांधकर घर में कैद होकर अनाज साफ करोगे। तुम आजाद थे और हम बंधे हुए। एक दिन हम आजाद होंगे और तुम बंधे हुए। समय का पहिया है और समय–समय की बात है, आज जानवर आजाद हैं और मनुष्य कैद में हैं। सारी पाबंदिया मनुष्य पर हैं और अन्य प्राणी निःसंकोच विचरण कर रहे हैं।" कमजी काका से मैंने सहमत होते हुए कहा आप सही कर रहे हैं। हमें प्रकृति ने जीवन जीने के सलीके सिखाए हैं।